जैसा चिन्तन वैसी गति

सुधा अग्रवाल

नदी के किनारे एक नाचनेवाली का महल था। दूसरे किनारे पर एक साधू बाबा कुटिया बनाकर रहते थे। नाचने वाली के पास दिन रात लोग आते हैं। महात्मा जब रोज उन्हें आते-जाते देखता तो सोचता-रे! यह कैसी चाण्डालिनी है, कितनी खराब है? कैसे निकृष्ट कर्म करती है?...महात्मा रात-दिन उसी के बारे में सोचता रहता।

वह नर्तकी जब प्रातःकाल उठती और महात्मा की कुटिया देखती तो कहती– 'अहा! कैसा पवित्र जीवन है। इस महात्मा ने यहां एकान्त में भजन करते हुए जीवन सफल बना लिया है, लेकिन प्रभु! आपने मुझे कहां गिरा दिया। क्या कभी मैं इस महात्मा जैसे बन सकूंगी। कभी आपका भजन कर सकूंगी? यह वह दिन-रात सोचती।

मरने पर दोनों यमराज के पास जाते हैं। महात्मा अब भी वही चिन्तन कर रहा है। उसे कोस रहा है, गालियां दे रहा है। यमदूतों ने पकड़ा और नर्क में डाल दिया।

उधर यमदूतों ने देखा कि नर्तकी आज भी महात्मा जैसा बनने की प्रार्थना कर रही है। उसी के जीवन से प्रभावित हो रही है। उसी जीवन को धन्य मान रही है तो यम के दूत उसे शिवलोक पहुंचा दते हैं। □